फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

परेशानियों से किस प्रकार जूझें कि आपस में सहानुभूति– सहयोग बढ़ें ?

नई सीरीज नम्बर 186 दिसम्बर 2003

जीवन बनाम काम-पैसा-काम-पैसा

●**18– 20 वर्ष आयु** : पैसा कमाना है। यहाँ आये ही हैं पैसे कमाने। बैठा कर कौन खिलायेगा ? 1000- 1200- 1500 रुपये महीना तनखा और ओवर टाइम। हर रोज 12- 16 घण्टे ड्युटी। थोड़ी तड़क- भड़क और थोड़े लटके- झटके।

●**28– 30 वर्ष आयु** : परिवार का खर्च – बच्चे पालने हैं। छुट्टी की जगह ड्युटी की "चाहत" – सिंगल रेट पर ओवर टाइम के लिये "तैयार"। अतिरिक्त दो पैसों के लिये 12- 16 घण्टे ड्युटी अथवा 8 घण्टे ड्युटी के बाद कोई धन्धा। शरीर- कपड़ों- रिश्तों के प्रति बढती लापरवाही।

●**चालीस पार** : नौकरी नहीं है। अहसान कर 8 घण्टे के 1200 रुपये – हर रोज 12 घण्टे, महीने के तीसों दिन काम करना होगा। मुखर लाचारी।

●कदम- कदम पर भाँति- भाँति की दुकानें, घर में दुकान, रेहड़ी पर दुकान, साइकिल पर दुकान, सड़क किनारे जमीन पर दुकान.....

और, इस माहौल में पड़ोसियों से, सहकर्मियों से, नाते- रिश्तेदारों से, जान- पहचान वालों से, मित्रों से इक्कीस होने के फेर में कोढ वाली खाज।

जीयेंगे कब? जीने के लिये समय कहाँ है? और, बहुतों द्वारा स्वयं को, मानव को प्राणियों-जीवों में श्रेष्ठ की पदवी !

✱समस्त के लिये तो शायद नहीं परन्तु काफी जीवों- प्राणियों के लिये दाना- पानी- घौंसला को अनिवार्य आवश्यकतायें कह सकते हैं। इन जरूरतों का स्वयं में सुखद होना और इनकी प्राप्ति के लिये गतिविधियों का मजेदार होना प्राणियों में व्यापक हैं। लेकिन मनुष्यों में काफी समय से दाना- पानी- छत और इनकी प्राप्ति बढती मजबूरी व दुखद गतिविधियों का रूप धारण करती आई हैं। वर्तमान में तो अधिसँख्यक मनुष्यों का जीवन रोटी में ही मर- खप रहा है।

✱पीढी के अन्दर, पीढियों के बीच विभिन्न प्रकार के रिश्ते जीव व जीव- नस्ल के तारतम्य के संग- संग जीवन के उल्लास को, जीवन के अर्थ को बनाये रखते हैं। काफी प्राणियों में आमतौर पर सम्बन्ध सुखद हैं और जीवन के प्रति लगाव- अनुराग है। लेकिन इन पाँच- सात हजार वर्ष से मानवों के बीच जीवन को शाप मानने की प्रवृति बढती आई है। जन्म लेने से बरी होना मुक्ति- मोक्ष ! आज "समय काट रहे हैं", "किसी तरह जिन्दगी कट जाये" व्यापक हो गये हैं।

✱कई प्रकार के प्राणियों में एक पीढी अपने ज्ञान- कौशल का अपने में आदान- प्रदान करती है और अगली पीढी को सुपुर्द करती है। ऐसे प्राणियों में अपने बीच तथा बच्चों और बड़ों के बीच आमतौर पर खेल- खेल में आदान- प्रदान होते हैं – सीखना और सिखाना मजेदार गतिविधियाँ होती हैं। लेकिन समुदाय टूटने और ऊँच- नीच/अमीर- गरीब के आगमन ने मानवों के बीच रिश्तों को यातनामय बनाना आरम्भ किया। मण्डी की जरूरतों की पूर्ति के लिये उभरा विद्यालयों का जाल व्यापक स्तर पर बच्चों के लिये यातनागृहों का निर्माण है। पीढियों के बीच सम्बन्ध- विच्छेद के सिलसिले का बढना बड़े- बूढों को फालतू बना मौत का इन्तजार करने वालों में बदल रहा है। वृद्धाश्रम और "बच्चे आफत हैं" – एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

✱ज्ञान- कौशल का संचय और पीढियों के बीच हस्तांतरण तो कई प्रकार के प्राणी करते ही हैं, मनुष्यों के अलावा भी कई जीव भौतिक रूप में संचय करते हैं, जोड़ते- बनाते- एकत्र करते हैं। मधुमक्खियों द्वारा छत्ता बनाना- शहद एकत्र करना, गिलहरियों द्वारा खाद्य वस्तुओं का भण्डार बनाना, चिड़ियों द्वारा नीड़- निर्माण, ... विभिन्न प्रकार के संचय जीवन को अधिक सुखद- सुरक्षित- बेहतर बनाने के लिये। लेकिन समुदाय- रूपी समाज रचना टूटने और ऊँच- नीच/अमीर- गरीब वाली समाज व्यवस्थाओं के उदय के साथ संचय और बढता संचय अधिकाधिक मनुष्यों के जीवन को अधिक दुखद- असुरक्षित- बदतर बनाता आया है। पीढी- दर- पीढी विराट/सूक्ष्म- दर- विराट/सूक्ष्म होता आया संचय आज हर क्षेत्र में – कौशल में, ज्ञान में, भौतिक रूप में – इतना विकट- विकराल हो गया है कि एक तरफ व्यक्ति का होना- न होना बराबर- सा हो कर बढते अकेलेपन के रूप में हर व्यक्ति को डसने (**बाकी पेज तीन पर**)

– चिड़िया आज भी काफी समय चहकती- फुदकती हैं। अधिकतर मनुष्यों का अधिकतर समय आज निन्यानवे के फेर में है।

– पालतु बनाये जाने के बाद से गधों पर बोझ लादा जा रहा है परन्तु शुक्र है कि गधा संसाधन विकास विभाग फलेफूले नहीं हैं और गधे आज भी हाँची- हाँची कर लेते हैं। बोझ ढोने में पहले ही अव्वल बन चुके मनुष्य के तन- मन- मस्तिष्क को इधर चिकित्सा- मनोचिकित्सा- मानव संसाधन विकास विभागों ने तराश- ढाल- परिवर्तित कर बोझ ढोने में अतुलनीय बना दिया है।

– कुत्ते कभी- कभार लड़ते हैं। गली के कुत्तों में आमतौर पर दोस्ती होती है। और, सबुह- शाम तो कुत्ते अक्सर मिल कर खेलते हैं (होड़ वाले युद्ध- रूपी खेल नहीं)। मनुष्यों के बीच होड़ और शत्रुतापूर्ण टकरावों की तैयारी का अनन्त सिलसिला आज चलता है।

– सूअर जंगलों में कन्द- मूल खाते और शीतलता के लिये साफ- सुथरी गीली मिट्टी में लौटते हैं। पालतु बना और शहरों में ला कर हम ने सूअर को गन्दगी का पर्याय बना दिया है। लेकिन सूअर के तन के संग हम अपने मन को देखें तो मनुष्यों से अधिक मैली कोई चीज आज शायद ही हो।

किसी को गधा, कुत्ता, सूअर कहने से पहले इस पर विचार करने की आवश्यकता है कि गधे, कुत्ते, सूअर का अपमान किया जा रहा है अथवा इनके नाम से पुकारे जाने वाले मनुष्य की बड़ाई की जा रही है।

बेशक मरने तक की फुर्सत नहीं है परन्तु जीने के लिये समय चाहिये तो वर्तमान समाज व्यवस्था और नई समाज रचना के बारे में विचार- विमर्श, चर्चायें करनी होंगी, कदम उठाने होंगे।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

कानून : •37–40 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7–10 तारीख तक दे ही देना; •8 घण्टे की ड्युटी, तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगनी दर से; •हरियाणा में अकुशल श्रमिक-हैल्पर की कम से कम दिहाड़ी 84 रुपये 53 पैसे और सप्ताह में एक छुट्टी व 8 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी पर महीने में अकुशल श्रमिक-हैल्पर की कम से कम तनखा 2197 रुपये 84 पैसे;•....

ए.आर.सी. मशीन टूल्स मजदूर : " 16/5 कारखाना बाग स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे की शिफ्ट है। किसी भी वरकर को ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिया है, प्रोविडेन्ट फण्ड भी नहीं है। हैल्परों को 1200 रुपये महीना तनखा देते हैं। ओवर टाइम काम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं।"

अल्फा टोयो वरकर : " प्लॉट 9 एच सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 300 परमानेन्ट और 300 ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर काम करते हैं। ट्रॉब सैक्शन में हम 150 मजदूरों की रोज 12 घण्टे ड्युटी है और प्रतिदिन 12 घण्टे काम के बदले में महीने में 2100 रुपये देते हैं।"

थर्मल पावर हाउस मजदूर : "इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित बिजली बनाने का यह सरकारी कारखाना है और यहाँ कई ठेकेदार हैं। एक ठेकेदार के जरिये रखे गये हम मजदूरों को 1500 रुपये महीना तनखा है और अक्टूबर का वेतन आज 19 नवम्बर तक नहीं दिया है।"

एस्कोर्ट्स वरकर : " ठेकेदार के जरिये रखे गये हम मजदूर एस्कोर्ट्स फस्ट और थर्ड प्लान्टों में सफाई तथा सेक्युरिटी का काम करते हैं। हमें सितम्बर और अक्टूबर की तनखायें आज 21 नवम्बर तक नहीं दी हैं।"

शिवालिक ग्लोबल मजदूर : " 12/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की ड्युटी है। महीने की तनखा 1700 रुपये है और इन 1700 में से ई.एस.आई. तथा पी.एफ. के पैसे काट कर 1390 रुपये तनखा के रूप में देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से हैं। एक्सीडेन्ट में ज्यादा चोट लगने पर ही ई.एस.आई. कार्ड देते हैं। तनखा देरी से देते हैं – अक्टूबर का वेतन 18 नवम्बर को दिया।"

बावा शूज वरकर : "प्लॉट 77 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 200 मजदूर काम करते हैं और 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। हैल्परों की तनखा 1200 रुपये महीना है। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, पी.एफ. नहीं। बावा शूज फैक्ट्री में **बाटा** के जूते और **रिलैक्सो** के लेडीज शूज बनते हैं।"

आर.आर. आटोमोटिव मजदूर : " 54 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में अगस्त, सितम्बर और अक्टूबर की तनखायें आज 14 नवम्बर तक नहीं दी हैं। आर.आर. के सैक्टर-24 स्थित प्लान्ट के मजदूरों और हम लोगों ने 24 अक्टूबर को तथा फिर 5 नवम्बर को अपनी तनखाओं के लिये उत्पादन बन्द किया।"

ट्रेक्टेल टिरफोर वरकर : " 14/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में हम कैजुअल मजदूरों को सितम्बर और अक्टूबर की तनखायें आज 18 नवम्बर तक नहीं दी हैं।"

कल्पना फोरजिंग मजदूर : " प्लॉट 35 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में कुछ वरकरों की साढे बारह घण्टे ड्युटी है और तीसों दिन इस ड्युटी के बदले में 1500 रुपये देते हैं – यह वरकर फैक्ट्री में रहते हैं। अन्य मजदूरों की 12 घण्टे ड्युटी है जिसके बदले 1600-1800 रुपये देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, पी.एफ. नहीं। कार्य के दौरान औजार टूटने पर दिहाड़ी काट लेते हैं।"

भोगल्स शूज वरकर : " 26 डी एल एफ एरिया स्थित फैक्ट्री में अक्टूबर का वेतन आज 17 नवम्बर तक नहीं दिया है।"

नैपको गियर मजदूर : "20/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में अक्टूबर का वेतन आज 22 नवम्बर तक नहीं दिया है। ओवर टाइम के पैसे देते नहीं और ओवर टाइम पर रुकने से इनकार करने पर गेट रोक देते हैं – बिना कोई पत्र दिये।"

भारत मशीन टूल्स वरकर : "प्लॉट 126,133, 138 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 16 घण्टे की एक शिफ्ट है – सुबह 6 से रात 10 बजे तक। ओवर टाइम दिखाते नहीं और इसके पैसे सिंगल रेट से देते हैं।"

इन्जेक्टो मजदूर : " 20/5 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में अभी मई की आधी तनखा दी है। जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर और अक्टूबर की तनखायें आज 22 नवम्बर तक नहीं दी हैं।"

और बातें यह भी

क्लच आटो मजदूर : " 12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में तनखा में देरी का सिलसिला जारी है। अक्टूबर का वेतन आज 19 नवम्बर तक नहीं दिया है। पहले चर्चा रहती थी कि एग्रीमेन्ट का समय है इसलिये जानबूझ कर कम्पनी ऐसा कर रही है परन्तु अब तो एग्रीमेन्ट भी हो चुकी है। अखबारों में मैनेजमेन्ट-यूनियन एग्रीमेन्ट की जो वाहवाही थी वह उन्हीं ने छपवाई थी – मजदूर एग्रीमेन्ट से नाखुश हैं। फैक्ट्री में धकाधक उत्पादन हो रहा है और ओवर टाइम भी लगता है लेकिन जुलाई से किये ओवर टाइम के पैसे कम्पनी ने अभी तक नहीं दिये हैं। जरूरी होने पर भी हम छुट्टी नहीं करें इसके लिये कम्पनी ने महीने में पूरी हाजरी पर एक अतिरिक्त दिहाड़ी का लालच दिया हुआ है लेकिन जून से यह अटेन्डेन्स अलाउन्स के पैसे भी नहीं दिये हैं।"

नया-नया वरकर : "प्लॉट 105 सैक्टर-59 स्थित **पोली मेडिक्योर** फैक्ट्री में भर्ती से पहले कई कागजों पर हस्ताक्षर करवाते हैं और डॉक्टर द्वारा जाँच के 90 रुपये मजदूर को देने पड़ते हैं। दिन की 13 घण्टे और रात की 11 घण्टे ड्युटी लेते हैं। भूतहा वर्दी पहनाते हैं और जून में मैं लगा तब पानी पीने तक को समय नहीं देते थे – मशीन से चिपके रहो। सुपरवाइजर गालियाँ बहुत देते हैं। तीन दिन में ही मैंने छोड़ने का तय किया तो बोले कि 7 दिन से पहले छोड़ोगे तो 13 घण्टे दिन में किये काम के मात्र 50 रुपये देंगे। पोली मेडिक्योर में विभाग से बाहर जूते-चप्पल निकालने पड़ते हैं और कैजुअल वरकरों के जूते-चप्पल बहुत खोते हैं क्योंकि इन्हें रखने का कोई प्रबन्ध कम्पनी ने नहीं किया है। हफ्ते-भर में मैंने दो जोड़ी चप्पल फैक्ट्री में खोई। हफ्ते की तनखा और ओवर टाइम के 380 रुपये दिये।"

इन्डीकेशन इन्स्ट्रुमेन्ट्स मजदूर : " प्लॉट 19 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 50-60 परमानेन्ट और 300 कैजुअल वरकर काम करते हैं। कैन्टीन नहीं है। कैजुअल वरकरों का प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं है, बोनस नहीं देते और ओवर टाइम के पैसे डेढ की दर से देते हैं। सुपरवाइजर बात-बात पर गाली देते हैं। रविवार, साप्ताहिक छुट्टी के दिन ओवर टाइम नहीं करने पर नौकरी से निकाल देते हैं। त्यौहार के दिन भी ड्युटी करनी पड़ती है। त्यौहार के दिन ड्युटी के बाद मैं मित्र से मिलने दिल्ली गया और अगले दिन ड्युटी के लिये दो घण्टे लेट हो गया तो मुझे नौकरी से निकाल दिया – दो महीनों से ऊपर हो गये थे काम करते।"

ललित फैब्रिक्स वरकर : "13/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री 9 वर्ष से बन्द है। यहाँ 250 परमानेन्ट और 200 कैजुअल मजदूर काम करते थे। मैनेजिंग डायरेक्टर खेमका दिल्ली में फ्रैन्ड्स कालोनी में रहता है और तीन बार फैसला कर चुकने के बाद भी हमें हिसाब नहीं दिया है।"

रोलाटेनर्स मजदूर : "कम्पनी की स्थिति बहुत डगमग है। वेतन देने में देरी, कभी कच्चा माल नहीं। हम मजदूरों के प्रोविडेन्ट फण्ड के पैसे कम्पनी द्वारा बनाये ट्रस्ट में हैं और हमारे यह पैसे हमें निचोड़ने के लिये कम्पनी इस्तेमाल करती रही है। कम्पनी के साथ हमारा प्रोविडेन्ट फण्ड भी न डूब जाये के दृष्टिगत हम ने अपने फण्ड के पैसे कम्पनी ट्रस्ट की बजाय सरकार के भविष्य निधि में जमा करवाना तय किया है। इस पर कम्पनी कहती है कि हम ने अपने निर्णय पर अमल के लिये जोर दिया तो कम्पनी बन्द हो जायेगी।" **(बाकी पेज चार पर)**

टेकमसेह प्रोडक्ट्स वरकर : " 38 कि.मी. मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में जुलाई से कम काम के नाम पर तनखा में कटौती और अधिक उत्पादन

जीवन बनाम काम-पैसा-काम-पैसा...(पेज एक का शेष)

लगा है तो दूसरी तरफ "निर्जीवों" तक को इस कदर विकृत कर दिया गया है कि समस्त प्राणी- समस्त जीव दाँव पर लग गये हैं।

✱ बात अपने को अथवा इसको- उसको - दूसरों को कोसने की नहीं है। बल्कि, काम- पैसा- काम- पैसा ने जो गत बनाई है, बनाते जा रहे हैं उस पर विचार- मनन करने की आवश्यकता है। ज्ञानी- विद्वान बड़बोलेपन में जिसे प्राणियों में श्रेष्ठ द्वारा प्रगति- विकास कहते कसीदे पढ रहे हैं और कलाकार- भाण्ड जिसे नफीस फूहड़पन से परोस रहे हैं उन्हें काफी ज्यादा कुरेद कर देखने की आवश्यकता लगती है। विद्यालयों, अखबारों- पत्रिकाओं, रेडियो- टीवी- फिल्मों के जरिये जो परोसा जा रहा है वह दुर्गत बढाने के तरीकों- राहों के अलावा और कुछ है क्या?

✱ " मेरे अपने लिये ही पूरा नहीं पड़ता, तेरे लिये कहाँ गुँजाइश है !" — समय, साधन, तन- मन की ऊर्जा के सन्दर्भ में वर्तमान में सम्बन्धों के सिकुड़ते जाने का वस्तुगत आधार है। काम- काम- अधिकाधिक काम अथवा खाली- खाली- खाली बैठना कसता जाता चक्रव्यूह है। पैसा- पैसा- निन्यानवे का फेर शर्तिया छलनी करना लिये है। असहाय..... लगता है कि असहायता की इबारत दीवार पर लिखी है। क्या वास्तव में? चिड़िया को देखिये.... जीवन क्या है? सफल जीवन क्या है?

✱ इन हालात का निर्माण हम मनुष्यों ने किया है। कई पीढियों के दौरान चली उठापटक के परिणाम हमारे सम्मुख हैं परन्तु उठापटक थमी नहीं है। मन्थन जारी है और पुरानों के संग- संग नये सिरे से, नये तरीकों से, नई राहों से वर्तमान समाज व्यवस्था को दफन करने तथा नई समाज रचना के प्रयास भी जारी हैं, बढ रहे हैं। हमें लगता है कि अलग- अलग व्यक्ति द्वारा और व्यक्तियों के बीच तालमेलों द्वारा उठाये जाते कदमों के महत्व को पहचानने- समझने के लिये असर- प्रभाव के माप- नाप के नये पैमानों को प्रयोग में लाने की आवश्यकता है — " कुछ नहीं हो रहा" की जगह तब " बहुत कुछ हो रहा है" नजर आने लगेगा।

पड़ोसियों, सहकर्मियों, मित्रों, नाते- रिश्तेदारों, जान- पहचान वालों के संग सम्बन्ध बढाने वाले कदम काम- पैसे के फन्दे को ढीला तो करते ही हैं, यह कदम जीवन, सफल जीवन की राह पर कदम भी हैं। मनुष्यों के बीच सम्बन्धों को गहरा करना, बढाना- व्यापक करना मौजूदा समाज व्यवस्था को ढहाने और पृथ्वी पर नई समाज रचना की राह है।

हमारे साथ जोड़

लक्षणों से हर कोई परिचित है, जूझ रही- रहा है। अधिकतर लोग बेहतर समाज के लिये अपने- अपने ढँग से कुछ- न- कुछ करना चाहते हैं लेकिन यह- वह मजबूरियाँ कई सद्इच्छाओं- सद्प्रयासों का गला घोंट देती हैं। विश्व- भर के और कई पीढियों के बेहतर समाज रचना के अनुभवों- विचारों से कुछ परिचय इन 25- 30 वर्ष के दौरान हम ने भी प्राप्त किया है। इस मजदूर समाचार के इर्द- गिर्द अनुभवों व विचारों को भी बीस वर्ष से अधिक हो गये हैं। विश्वव्यापी मन्थन और उसमें अपनी शिरकत के परिणामस्वरूप हम ने भी कुछ मोड़ काटे हैं। "क्या करें?" के सन्दर्भ में निष्कर्ष, अस्थाई- प्रारम्भिक निष्कर्ष के सिलसिले में हम फिर एक मोड़ पर हैं। अकेलेपन/अत्यन्त सीमित की असहायता और व्यापक के फेर में मशीन का पुर्जा मात्र बन जाने के पार जाने के लिये जोड़, तालमेल एक जरिया लगता है। वर्तमान को दफा करने और नई समाज रचना के लिये विभिन्न प्रकार के जोड़ बनाने, अनेकानेक तालमेलों के लिये हम यहाँ अनुरोध कर रहे हैं। दस वर्ष हो रहे हैं इस मजदूर समाचार की प्रतिमाह पाँच हजार प्रतियों को फ्री बँटते हुये और इसे पढने वाले हमारी इच्छाओं- आकांक्षाओं- व्यवहार से कुछ- कुछ परिचित हैं। जो लोग हमारे साथ जोड़ बनाना चाहते हैं, हमारे साथ तालमेल करना चाहते हैं वे मजदूर लाइब्रेरी में सुबह 11 से 12 बजे और शाम को 6 से 7 बजे किसी भी दिन मिलें। जो दूर रहते हैं और हमारे साथ जोड़ बनाना, तालमेल करना चाहते हैं वे खत लिखें। साधनों का योग हम सब की क्षमता बढायेगा।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी फरीदाबाद—121001

एस्कोर्ट्स

एस्कोर्ट्स मजदूर : "एस्कोर्ट्स आटोकम्पोनेन्ट्स में कई महीनों से कम्पनी तनखायें देरी से दे रही थी। वेतन माँगने पर मजदूरों को धमकाया जाता रहा है। अक्टूबर में तनखा माँगने पर 6 वरकरों को निलम्बित किया गया और 18 नवम्बर को 20 अन्य मजदूरों का गेट रोकने की मैनेजमेन्ट ने कोशिश की। हरियाणा सरकार से कम्पनी 101 मजदूरों की छँटनी की अनुमति ले आई है। हम 24 नवम्बर को ड्युटी के लिये पहुँचे तो कम्पनी द्वारा फैक्ट्री में तालाबन्दी की जानकारी मिली। हम बाहर गेट पर बैठे हैं। हमें सितम्बर और अक्टूबर की तनखायें आज 28 नवम्बर तक नहीं दी हैं।

"एग्री मशीनरी ग्रुप में कुछ महीनों से सुपरवाइजरों को तनखा देरी से दी जा रही थी— पहली की बजाय 20 तारीख के आसपास। कम्पनी की बहुत वफादारी करते रहे हैं अधिकतर सुपरवाइजर। मजदूरों से छत्तीस का आँकड़ा रखने के कारण वे हमें अपनी परेशानियाँ बताते भी नहीं थे। कई मजदूर भी सुपरवाइजरों की उपेक्षा करते रहे हैं। इधर कम्पनी ने सब सुपरवाइजरों को मैनेजर बना दिया है — पहले सुपरवाइजर लोग वरकर कैन्टीन में खाते थे, अब मैनेजर कैन्टीन में खाते हैं। धक्का मार कर बाहर करने के लिये ऊपर किया है — कभी भी और सस्ते में निकाल दिये जायेंगे का डर दिखा कर कइयों से वी. आर.एस. के तहत इस्तीफे लिखवाये गये हैं। अधिकतर सुपरवाइजर 45 वर्ष आयु से ऊपर थे — बहुत परेशान हैं। सच है कि कम्पनियाँ किसी की नहीं होती।

"मजदूर चिन्तित हैं। क्या होगा? अन्दरखाते की तो कोई क्या कह सकता है परन्तु मैनेजमेन्ट ने मीटिंग में कहा था कि एग्री मशीनरी ग्रुप में 4500 को घटा कर 3500 करना है।

"फार्मट्रैक प्लान्ट में कई सुपरवाइजरों ने मैनेजर बनने की बजाय वी.आर.एस. का फार्म भर कर नौकरी से इस्तीफे दे दिये हैं। यामाहा में भी कई सुपरवाइजरों- मैनेजरों को वी.आर.एस. में नौकरी छोड़नी पड़ी है। फार्मट्रैक में दोनों शिफ्टों में ट्रैक्टर बनाये जा रहे हैं — 100 परमानेन्ट मजदूरों को फस्ट प्लान्ट से यहाँ लाया गया है और 500 कैजुअल भी कम्पनी ने भर्ती किये हैं। वैसे, वैन्डरों को भुगतान नहीं किये जाने का असर उत्पादन पर पड़ता है। आटोकम्पोनेन्ट्स में तालाबन्दी पर गेट मीटिंग में लीडरों ने हमारी नौकरियाँ सुरक्षित होने का आश्वासन दिया, कहा कि वे पागल नहीं हैं जो हड़ताल करें।

" शॉकर डिविजन में उत्पादन बहुत ज्यादा है — सवा चार बजे जा कर छूट पाते हैं। दो शिफ्ट तो हैं ही, इधर कम्पनी ने काफी कैजुअल भर्ती कर उनकी सँख्या 150 कर दी है और कैजुअलों को तीसरी शिफ्ट में भी रोक लेते हैं। 'नौकरी सुरक्षित रखनी है, एग्रीमेन्ट का क्या करना' के लिये भी हम राजी थे पर अब रँग- ढँग देख कर लगता है कि एग्रीमेन्ट भी नहीं और छँटनी होगी वाली बात हो सकती है। आज सुपरवाइजरों को निकालने के लिये बहाने ढूँढे गये हैं, कल हमारे साथ ऐसा हो सकता है — कोई काण्ड रचा जा सकता है। सावधान रहना होगा।

" कहा जाता है कि कम्पनी का खर्च कम करना है। मुझे तो इसका मतलब यही लगता है कि मजदूरों की सँख्या कम करनी है। चार- पाँच महीने पहले एग्री मशीनरी ग्रुप का बड़ा साहब मजदूर ज्यादा हैं कह कर 1600 कम करने की बात कर चुका है। चार साल के अकाल के बाद इस वर्ष हुई अच्छी बरसात ने ट्रैक्टरों की माँग बढा दी है — 50 प्रतिशत माँग बढी है। लेकिन कम्पनी की नीति मजदूरों को हताश- निराश कर भगाने की है इसलिये बढी माँग को छिपाया जा रहा है। डर बढाने के लिये सुपरवाइजरों को उदाहरण बनाया गया है। एस्कोर्ट्स आटोकम्पोनेन्ट्स में 238 में से 101 की नामबद्ध छँटनी सूची और फिर तालाबन्दी .... बड़े हमले के लिये कम्पनी फिर से सोची- समझी चालें चल रही है। बहुत चौकसी की जरूरत है।"

अनन्त दलवी-अख्तर खान

3 अक्टूबर 2003 को मुम्बई में टाटा समूह की कम्पनियों के मुख्यालय बॉम्बे हाउस के सामने दो मजदूरों, अनन्त दलवी और अख्तर खान ने आत्मदाह कर प्राण त्याग दिये।

टाटा पावर की विभिन्न परियोजनाओं में 15-20 वर्ष से काम कर रहे 70 मजदूरों को टाटा मैनेजमेन्ट ने 1996 में नौकरी से निकाल दिया। बरखास्त किये गये मजदूरों ने अदालतों के दरवाजे खटखटाये। टाटा मैनेजमेन्ट ने उन्हें कैजुअल अथवा ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर कहा। बरसों चक्कर कटवाने के बाद न्यायालय ने मजदूरों को वापस नौकरी पर रखने का आदेश दिया परन्तु टाटा कम्पनी ने उन्हें नौकरी पर नहीं रखा और मजदूरों के परिवारों को कोई राहत नहीं मिली।

अनन्त और अख्तर ने आत्मदाह का निर्णय तब किया जब टाटा पावर मैनेजमेन्ट ट्रेड यूनियन नेताओं के साथ समझौता करके 70 बरखास्त मजदूरों की वापस नौकरी पर लिये जाने की माँग को फिर से ठुकराने जा रही थी। (जानकारी "मजदूर एकता लहर" के 16-30 नवम्बर अंक से ली है।)

मृत्यु - हत्या के मुहाने

सैक्टर-28 स्थित **शुभम्** कम्पनी में काम करती महिला मजदूरों को भी परिवहन का प्रबन्ध स्वयं करना पड़ता है। डबुआ कालोनी में रहती और शुभम् फैक्ट्री में नौकरी करती लड़कियों ने मिल कर मासिक भुगतान पर आटो किया हुआ है। डबुआ से सैक्टर-28 जाते समय 29 नवम्बर को आटो पलट गया और तीन महिला मजदूरों को गम्भीर चोटें आई — सरकारी अस्पताल में भर्ती हैं।

26 सितम्बर को आटो में यात्रा कर रही **लखानी शूज** में नौकरी करती तीन लड़कियों को गम्भीर चोटें आई थी।

आटो द्वारा नौकरी करने **पोली मेडिक्योर, हिन्दुस्तान सिरिंज, बिड़ला वी एक्स एल,....** जाती महिला मजदूर रोज की इन आटो यात्राओं में जब-तब रक्त बहा चुकी हैं।

एक आटो में 12-14 लड़कियों को ठूँसा जाता है; कई जगहों पर सड़क को छोड़ बगलों से गुजरना सड़कों पर से जाने से कम असुविधाजनक है; और रफ्तार बढाती हैं घड़ी की सूइयाँ — ड्युटी के लिए लेट नहीं हो सकते। बरसात और अब सर्दी तथा रास्ते की छेड़छाड़ आटो से ड्युटी आती-जाती लड़कियों की परेशानियों में अतिरिक्त काँटे हैं।

चोट, अंग-भंग, मृत्यु-हत्या के इस सिलसिले को एक्सीडेन्ट कहा जाता है। यह रुटीन को, सामान्य को एक्सीडेन्ट-दुर्घटना कहना है।

और बातें यह भी...(पेज दो का शेष)

के लिये इन्सेन्टिव का अजूबा जारी है। अक्टूबर के वेतन से 650 रुपये काटे ओर 300 रुपये इन्सेन्टिव दिया। परमानेन्ट मजदूरों में से 30 प्रतिशत को निकालने के लिये 13 नवम्बर को कम्पनी ने फिर वी.आर.एस. लगाई है — 20 नवम्बर से पहले इस्तीफा लिखने पर 6 हजार रुपये अतिरिक्त, 20 नवम्बर के बाद यह रकम 3 हजार हो जायेगी! संग ही संग यूनियन और मैनेजमेन्ट ले-ऑफ की अनुमति सरकार से मिल गई है की बातें फैला रहे हैं।"

गैलेक्सी इन्स्ट्रुमेन्ट्स मजदूर: "मथुरा रोड़ पर फ्रिक इण्डिया के सामने स्थित फैक्ट्री में पीने के पानी का उचित प्रबन्ध नहीं है और साहब बहुत उल्टा-सीधा बोलते हैं।"

बन्दी वाणी (5)

[अमरीका सरकार ने "अपने" बीस लाख लोगों को सजा दे कर और आठ लाख को विचाराधीन कैदी के रूप में बन्दी बना रखा है। यूँ तो सम्पूर्ण संसार ही जेलखाने में ढाल दिया गया है, अधिकाधिक ढाला जा रहा है, फिर भी, सरकारों के कारागारों में बन्द हमारे बन्धुओं पर जकड़ हम से अधिक होती है। अनुवाद की और सन्दर्भों की दिक्कतों के कारण यहाँ हम अपने शब्दों में अमरीका सरकार के कैदखानों में बन्द लोगों की वाणी को प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं।]

अनगिनत प्रहर के मनन के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि अपराध एक मादक नशा है। परिवार, मित्र और स्वयं का जीवन भी इस मादकता के समक्ष महत्वहीन हैं।

मैंने 12 वर्ष का होते-होते अपराध के संसार में प्रवेश कर दिया था। पहलेपहल तो मैंने जैसे अपने होने को महसूस किया। अपराध को हानिकारक बताने वालों को मैं ईर्ष्यालु और मेरी सफलता से जलने वाले समझता था। नये कपड़े, नये जूते, आभुषण, मोटरसाइकिलें, कारें .... जब जो इच्छा हो उसकी पूर्ति।

अपराध की सीढी के हर स्तर से मैं गुजरा और चुस्ती-फुर्ती से बचता रहा। मादक पदार्थों की बिक्री, लूटपाट, ठगी, सुपारी.... मैं अपराध के हर क्षेत्र के रंग में गिरगिट की तरह समा जाता। लेकिन अपराध को मैं छोड़ नहीं सका। मुझे अपराध में मजा आना बन्द हो गया था परन्तु गर्भवती स्त्री की खट्टी चीजों के लिये चाह जैसी ऐसी हूक-सी उठती कि मैं अपने को रोक नहीं पाता। मेरा खालीपन और हूक मुझे नशेड़ी-समान अपराध करने में ले जाते।

मैं जानता था कि मेरे धन्धे का परिणाम आजीवन जेल अथवा मेरी हत्या हो सकत था। मैं हर समय चौकस रहता था। कितनी ही बार मैं मृत्यु से बचा — गोलियों की बौछारे से कितनी ही बार रूबरू हुआ .... मैं मानने लगा था कि मैं कभी भी पकड़ा नहीं जाऊँगा न तो जेल को और न ही मृत्यु को मुझ से मिलने का अवसर मिलेगा! लड़कपन में मैंने स्वयं को "शैतान का वकील", "सजीव गर्भपात", "जिन्दा लाश" जैसे नाम दे दिये थे

पुराने गिरोह मुक्कों, डण्डों, चेनों, चाकुओं और कभी-कभी पिस्तौलों से लड़ते थे मेरी पीढी के गिरोह लड़ने की बजाय युद्ध करते। हम बन्दूकों, ग्रेनेडों आदि शक्ति-सत्त को प्रदर्शित करते हर हथियार का इस्तेमाल करते। हमारे खेल में शर्तिया रक्त बहता

कुछ अजीब-सा लगता है कि अब जीवन में हर चीज मजा-मजे से जोड़ दी जाती है। गिरोहबाजी "खेल" है। मादक पदार्थ बेचना "कला" है। बन्दूकों से मारामारी "गन प्ले" है। पत्नी से बेवफाई उसके साथ "खेलना" है। ऐसे लगता है कि हर चीज मजा-मजेदार है, खेल है.....

मुझे समझना चाहिये था कि मेरे जीवन में कुछ गड़बड़ है जो कि मेरा परिवार मुझ से डरता है। परिजनों की निगाहों में मैं मर चुका था..... जब तक कि उन्हें मुझ से किसी को ठिकाने लगाने का काम नहीं पड़ता था। और मैं इस आशा में उनके काम कर देता था कि मेरे प्रति उनकी भावनायें बदलेंगी। परन्तु ऐसा हुआ नहीं। पकड़े जाने पर मेरे एक परिजन ने सब मामलों में अपराध स्वीकार करने को कहा ताकि जीवन-भर जेल में पीड़ा झेलने की बजाय मुझे मृत्यु-दण्ड मिले। एक क्षण के लिये मैंने इसे कठोर प्यार का इजहार माना। लेकिन फिर मैंने समझा कि वे मुझ से छुटकारा चाहते थे, मुझे मृत मानने की बजाय वे मुझे सचमुच में मरा हुआ चाहते थे। वैसे मैं इसे पहले भी जानता था परन्तु इसे स्वीकार करने से इनकार करता रहा था।

जेल ने मुझे बचाया है ... क्या वाकई? मेरी "गुण्डा" प्रवृति धीरे-धीरे मिट रही है। लेकिन.... इतने लेकिन हैं कि मैं शायद गन्द से भरा हूँ। कौन कह सकता है कि इतने लोगों को ठगने के बाद मैं स्वयं को नहीं ठग रहा? मैं कहता हूँ कि मैं बदल गया हूँ और अब जीवन को भिन्न दृष्टि से देखता हूँ परन्तु इसे परखने के सचमुच के अवसर मुझे अब कहाँ मिलेंगे (अमरीका सरकार ने आजीवन कारावास को शब्दशः अन्तिम साँस तक कैदखाने में रखा है)। कभी-कभी मैं जीवन के प्रति अपने नये रुख पर प्रश्न-दर-प्रश्न उठाता हूँ।

इतने अन्तर्विरोध, इतनी उलझनें! पुराने घावों वाले कैदी का जीवन और विचार बहुत कठिन हैं। मेरे तन की स्वतन्त्रता छीन ली गई है। मेरे मन-मस्तिष्क की स्वतन्त्रता से बलात्कार किया गया है और मैं जानता भी नहीं था कि यह सम्भव है। क्या मेरा मर जाना बेहतर था जैसी कि कई लोगों की इच्छा थी? या, क्या मुझे शुक्रगुजार होना चाहिये कि मैं अब भी साँस ले रहा हूँ — जबकि मैं अपने वर्तमान जीवन को जीना शायद ही कह सकूँ।

मेरा जीवन धीरे-धीरे मिटता जा रहा है.....

— ली, अमरीका सरकार के कारागार में बन्दी

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।